IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

Volume 4, Issue 8, August 2024

Impact Factor: 5.731

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में नारी, परिवार और समाज

भारती पूनियां[1] डॉ. सुरेश कड़वासरा[2]

[1] शोधार्थी [2] शोध निर्देशक

विभाग हिंदी विभाग हिंदी

श्री खुशाल दास, विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

शोध आलेख सार

अमृतलाल नागर की साहित्य के अतिरिक्त सर्वाधिक रुचि इतिहास एवं पुरातत्व के प्रति रही है। उनके इतिहास तथा पुरातत्व के प्रति गहन आसक्ति तथा आस्था के फलस्वरूप ही उन्होंने भारत के अतीत से सानिध्य स्थापित किया। इसी कारण उन्होंने भारतीय परम्पराओं को सही दृष्टि से देखने की चेष्टा की है। उन्होंने भारतीय परम्पराओं, रीति–नीतियों के सभी पक्षों का पूर्ण मूल्यांकन किया है।

वे इतिहास के प्रखर अध्येता थे। उनकी रुचि किसी काल विशेष तक सीमित नहीं थी बल्कि भारत के प्राचीन इतिहास के प्रति जितना प्रेम था उतना ही मध्यकालीन तथा आधुनिक इतिहास के प्रति भी उन्हें लगाव था। उन्होंने अपने ऐतिहासिक ज्ञान को साहित्य सृजन में प्रयुक्त किया और ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से राजाओं, महाराजाओं, सामंतों तथा बादशाहों के जीवन से अधिक तद्युगीन सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को उद्घाटित किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में ऐतिहासिक कथ्य को एक साहित्यकार और समाज शास्त्री की दृष्टि से देखा है।

मूल शब्द – नारी, परिवार एवं समाज

भूमिका –

नारी प्रकृति का सुन्दरतम उपहार है। इस सृष्टि की आधार रूप नारी है। इसी कारण आरम्भ से ही सृष्टि के निर्माण और संचालन में नारी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। मानव जाति की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का मूल आधार नारी ही है।

नर और नारी दोनों को इस सृष्टि का मूल तत्व माना जाता है। इन दोनों के सहयोग से ही इस सृष्टि का निर्माण हुआ है। नारी पुरूष की प्रेरणा है और पुरूष संघर्ष का प्रतीक है। प्रेरणा और संघर्ष जब पूर्ण रूप से एक हो जाते हैं तो उसी को जीवन कहते हैं। नारी पुरूष के संबंध में याज्ञवल्क्य ने कहा है ''जिस तरह चने अथवा सीप का आधा दल दूसरे से मिलकर पूर्ण होता है उसी प्रकार पुरूष के सामने का खाली आकाश नारी के साथ मिलने से पूर्ण होता है।'' अर्थात् नर नारी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। नारी में दया, ममता, स्नेह, कोमलता आदि गुण होते हैं और सृष्टि इन्हीं गुणों पर टिकी हुई है।

''ऋग्वेद में नारी को 'मेना' कहा गया है, क्योंकि उसे पुरूष सम्मान देते हैं। उसमें लज्जाभाव का विशेष उद्रेक होने के कारण वह स्त्री कहलाई।'' जब नारी स्वयं को पुरूष के प्रति समर्पित कर देती है तब योषा नाम की अधिकारिणी हो जाती है।

Copyright to IJETIR
www.iciset.in

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

''वह पुरूष की अनुगामिनी मात्र न होकर 'सहधर्मिणी' और 'सहचरी' भी है। पुरूष के साथ रहते और चलते समय उसे सदा उसके साथ रहना होता है। पुरूष का दाहिना हाथ कर्म और पुरूषार्थ का प्रतीक है तथा बायॉ हाथ विजय और सफलता का।'' नारी पुरूष की शक्ति, ज्योति और सिद्धि का प्रतीक है।

प्राचीन काल से ही नारी किसी न किसी रूप में चिन्तन का विषय रही है। डॉ. शीला रजवार के अनुसार ''एक ओर तो नारी को देवी मानकर उसके गुणों की पूजा की जाती रही और दूसरी ओर उसे पाप की खान मानकर उसकी निंदा की गई। लेकिन वास्तविकता यह है कि नारी न तो देवी है और न ही वह दानवी वह भी एक मनुष्य है। जिसमें दया, माया एवं विश्वास है। वह क्रूर, कठोर एवं विश्वासघातिनी भी है। वह प्रेम करना भी जानती है और घृणा भी, सुलह करना भी जानती है और कलह भी।'' पुरूष ने नारी को देवी, दानवी आदि नामों से पुकारा और वह इनसे सन्तुष्ट न हुआ तो उसने कहा कि नारी एक पहेली है। नारी का स्वरूप जयशंकर प्रसाद की इन पंक्तियों में पूर्णतः साकार हो उठता है –

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूश स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।''

मानव जीवन का सच्चा सौन्दर्य नारी में निहित है। स्त्री तो अपने नाम से ही कोमल है। इसलिए सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा है ''साहित्य में एक पृष्ठ में एक विकच नारी मूर्ति तम के अतल प्रदेश में मृणाल दण्ड की तरह अपने शत–शत दलों को संकुचित, संपुटित लेकर बाहर आलोक के देश में अपनी परिपूर्णता के साथ खुल पड़ती है। जड़ों में प्राण संचित हो जाते हैं, अरूप में भुवन मोहिनी ज्योति स्वरूपा नारी।''

महत्व –

प्राचीन काल में नारी की स्थिति अच्छी थी। उसे पूज्य स्थान मिला हुआ था। वैदिक काल में समाज पितृसत्ता प्रधान परिवार था परन्तु फिर भी स्त्री सच्चे अर्थों में गृहस्वामिनी थी जो परिवार में सबसे ऊपर शासन करती थी। नारी के बारे में यह सत्य है कि ''युगों–युगों से पददलित, अपमानिता और लांछिता नारी के गौरव एवं गरिमामय तथा पावन स्वरूप की सर्वाधिक प्रतिष्ठा यदि कहीं है तो वह वैदिक साहित्य में ही देखी जा सकती है।''

वैदिक युग को नारी का स्वर्णकाल माना जाता है इस काल में नारी को ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' कहकर विभूषित किया है। इस युग में नारी अपने पिता के घर से पति के घर में जाकर सम्मान पाती थी। नारी को अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता थी। वह प्रेम विवाह भी कर सकती थी। विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध नहीं था। पुरूष जीविकोपार्जन का कार्य करते थे और स्त्रियॉ गृहस्थी का कार्य करती थी। योग्यतानुसार स्त्री और पुरूष को समान रूप से शिक्षा दी जाती थी। माता को पिता एवं गुरू से भी श्रेष्ठ माना जाता था। ''इस काल में स्त्रियॉ पराक्रमी, वीर, सबला और शूर होती थी।'' स्त्रियॉ पुरूषों के साथ युद्ध क्षेत्र में भाग लेती थी।

उन्हें युद्ध कला की शिक्षा दी जाती थी और वे पारिवारिक यज्ञों में सक्रिय सहयोग देती थी। स्त्री के बिना यज्ञ कार्य पूर्ण नहीं समझा जाता था। गृहस्थ जीवन में स्त्री को सम्मानीय स्थान दिया जाता था एवं स्त्री–पुरूष दोनों को समान दृष्टि से देखा जाता था।

पुष्पावती खेतान के अनुसार ''वेदों में स्त्री–पुरूष को जीवन रूपी रथ के दो पहिए माना है। उन्हें आकाश और भूमि के समान एक दूसरे का पूरक माना गया है।'' पत्नी के रूप में नारी को पुरूष के समान ही समझा जाता था। पति के परिवार में स्त्री का स्वागत गृहलक्ष्मी और गृहस्वामिनी के रूप में होता था और स्त्री को सम्राज्ञी के समान समझा जाता था –

''सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।
ननाद्वरि सम्राज्ञी, सम्राज्ञी अधि देवसु।।''

Copyright to IJETIR
www.iciset.in

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

शिक्षा का आरंभ उपनयन संस्कार के पश्चात् होता था। उपनयन संस्कार पुत्र एवं पुत्री दोनों का होता था। दोनों ही शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरू के पास आश्रम में जाते थे। पुत्री भी पुत्र की भॉति ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थी तथा यज्ञोपवीत, मौजी, मेखला और वल्कल वस्त्र धारण करती थी। वेदों में कहा गया है ''ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर शिक्षा समाप्त करने पर ही युवतियॉ योग्य पतियों को प्राप्त करती थी। ब्रह्मचर्येण कन्या सुवानं विन्दते पतिम्।'' स्त्रियों के लिए शिक्षा की अच्छी व्यवस्था थी और इस काल में अनेक विदुषी स्त्रियॉ हुई। मातृ रूप में उसकी पूजा की जाती थी। माता को सन्तान की प्रथम गुरू माना जाता था। तैतिरीय उपनिषद् में माता के बारे में कहा गया है –

''मातृ देवो भव, पितृ देवो भव।''

इस काल में नारी का विधवा होना कलंक नहीं माना जाता था। विधवाओं को दूसरा पति चुनने का अधिकार था। अपने देवर से भी विवाह कर सकती थी। देवर का अर्थ ही द्विवर अर्थात् दूसरा वर माना जाता था। संतानहीन विधवा को नियोग द्वारा संतान प्राप्ति की भी स्वतंत्रता थी। डॉ. एस.सी. सरकार के अनुसार – ''नियोग पुत्र प्राप्ति के उद्देश्य तक ही सीमित नहीं था बल्कि उसका आश्रय प्रेम, वंश तथा सम्पत्ति के निमित्त भी लिया जाता था।'' पिता की सम्पत्ति में स्त्री का अधिकार होता था। माता–पिता के द्वारा मिला दहेज तथा पति द्वारा प्राप्त धन पर स्त्री का ही अधिकार होता था। स्त्री की मृत्यु के बाद उस धन पर उसकी पुत्री का अधिकार होता था। इस प्रकार वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति सर्वोत्कृष्ट थी। अपनी इस स्थिति के लिये पुरुषों के साथ–साथ स्वयं महिलाऍ भी उत्तरदायी थी उन्होंने अपनी योग्यता, आत्मबल, धैर्य और सहिष्णुता के द्वारा उच्चकोटि की सामाजिक अवस्था और मानवीय मूल्यों की स्थापना की थी। इसलिए वैदिक काल को नारी की स्वतंत्रता का स्वर्ण काल कहा जाता है।

नागर जी ने सजग लेखक की भाँति सांम्प्रदायिकता की विकरालता को पहचानता है और अपनी कृतियो ं द्वारा राजनीतिक दलों की स्वार्थपरता पर कठोर प्रहार किया है। 'बूँद और समुद्र', 'अमृत और विष', 'बिखरे तिनके,' अग्निगर्भा तथा करवट उपन्यासों में सांप्रदायिकता की घिनौनी स्थिति वर्णित हुई है। 'अमृत और विष' में साप्रंदायिकता के खिलाफ लेखक स्पष्ट रूप से कहता है– "ये सब सांप्रदायिक संकीर्णता, मूर्खता, क्रूरता आदि हर तरहकी प्रतिगामी और अमानवीय स्थिति में पहुँच जाते हैं। जबलपुर के हिन्दू–मुसलमान दंगे ने मुझे आंतरिक पीड़ा पहुँचाई है। हिन्दुस्तान–पाकिस्तान बँट गया, लेकिन हिन्दू–मुसलमान समस्या अब भी जहाँ की तहाँ सी ही लगती हैं।"

हिदायत का सारगर्भित निम्नलिखित कथन इस बात को प्रमाणित करता है कि यह साम्प्रदायिक दंगा ॉहरों की देन है– "अमा" ये हिन्दू–मुसलमान का झगड़ा तो हमने सिर्फ यहाँ ॉहर ही में आ के देखा , हमारे गाँवों में तो यह तमा'ा अभी तक दिखलाई ही नहीं देता। जब एक गाँव वाले दूसरे गाँव वालों पर हमला करते हैं तो हिन्दू–मुसलान सब साथ होते हैं। उसमें यह कभी नहीं होता कि मुसलमान सिर्फ हिन्दुओं का ` ही मारे और मुसलमानों को छोड़ दे। दो गाँवों की लड़ाई होती है, हिन्दू मुसलमान की नहीं।"

"अग्निगर्भा' में सांप्रदायिक दंगे का चित्रण है। इस उपन्यास में लेखक ने दंगो के प्रति चिंता जताई है – "क्या–क्या दुर्भाग्य भोगने पड़े है इस देश को हिन्दू–मुसलमान होने से दो जातियाँ अलग हो गई। सीमान्त गाँधी खान, अब्दुल गफ्फार खाँ के पुरखे ऋगुवेद की ऋचाएँ गाते थे लेकिन अ बवह पराये हो गए हैं। वैदिक नहीं म्लेच्छ हो गए हैं। वाह कैसा मजाक है? इस प्रकार नागरजी ने सापं्रदायिकता के सकीर्ण चिंतन का खुलकर विरोध किया है। धार्मिक कट्टरता को भुलाकर उदार दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत पर वे बल देते हैं।

देश की वर्तमान राजनीति महज कुर्सी और व्यक्ति केन्द्रित राजनीति बन चुकी है। उम्मीदवारों के षडयन्त्र, खर्चीले आयोजन एवं विविध प्रयोग जनता का मत प्राप्त करने के बड़े–बड़े नारे व्यापक मूल्यहीनता के प्रतीक हैं। नागर जी ने अपने

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 8, August 2024
Impact Factor: 5.731

सामाजिक उपन्यासों में राजनीति विषयक कुचक्रों का पर्दाफाश किया है। 'बूँद और समुद्र' का महिपाल राजनीतिक सरं थाओ ं की वास्तविकता को स्पष्ट करता है– "जिस व्यक्ति की पीड़ओं का सामूहिक रूप में प्रदर्शन कर ये राजनीतिक सिद्धान्त बने हैं, उसकी अनुभूति उसकी तड़प अब हमारे मन से निकल गयी है। हमारी नजर अब सिर्फ पोलिटिकल रह गयी है।"

सारांश –

अमृतलाल नागर के व्यक्तित्व का विश्लेषण करने पर उसमें अनेक विरोधी धाराएँ स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका व्यक्तित्व विरोधी गुणों का अनूठा संगम था। ''एक तरफ वे जीवन संग्राम के जीवन्त योद्धा, उदार हृदय, रूढ़िमुक्त शैव आस्तिक, बहु घुम्मकड़, बहुश्रुत, बहुपठित, बहु बोली पारखी, बहु भाषा विज्ञ, जागरूक, इतिहास, पुराण प्रेमी, पूर्वाग्रह–मुक्त प्रगतिशील विचारक, अनुसंधित्सु, क्षेत्रीय शोधकर्ता, योग्य अनुवादक, सुधी सम्पादक, प्रवीण हास्य व्यंग्यकार, कुशल अभिनेता, सफल रंगमंच निर्देशक, प्रवीण सिनेरियो लेखक, अपूर्व शैलीकार, बाल–साहित्य प्रणेता और अनेक लेखों, निबन्धों, संस्मरणों, रेडियो नाटकों एवं कहानियों के रचियता हैं तो दूसरी तरफ अलमस्त एवं विनोदी स्वभाव के फक्कड़, खुशमिजाज, मजाक–मिजाजी थे।''

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. अनिता रावत : अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–1998
2. अमृतलाल नागर : टुकड़े–टुकड़े दास्तान, (आत्मकथा), प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, संस्करण–1986
3. अमृतलाल नागर : साहित्य और संस्कृति, प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1994
4. अमृतलाल नागर : जिनके साथ जिया, प्रकाशक– राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, संस्करण–1973
5. अमृतलाल नागर : रचना संचयन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
6. अमृतलाल नागर : अमृतलाल सूक्ति, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2007
7. अज्ञेय : नदी के द्वीप, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2015
8. आशारानी व्होरा : औरत कल आज और कल, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, संस्करण–2005